P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

-भगवान महावीर की निर्वाण-भूमि पर निर्मित भव्य जल-मंदिर पावापुरी के समक्ष पूज्य गुरूदेव, सौरभ मुनि, पारखजी, झा साहब, अरूण तिवारी तथा पुजारी।

-ईसा पूर्व 2-3 शताब्दी में निर्वाण-लाभ के लिए जैन आचार्य वज्र द्वारा बैभार-गिरि की तलहटी में निर्मित गुफा के समक्ष (बायें से) पारख जी, विनीता जी, सौरभ मुनि, पूज्य गुरूदेव, डॉ. बागरेचा दंपति, झा साहब, गाइड आदि।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
मई, 2010

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

राजगीर - नालंदा - पावापुरी - यात्रा अंक

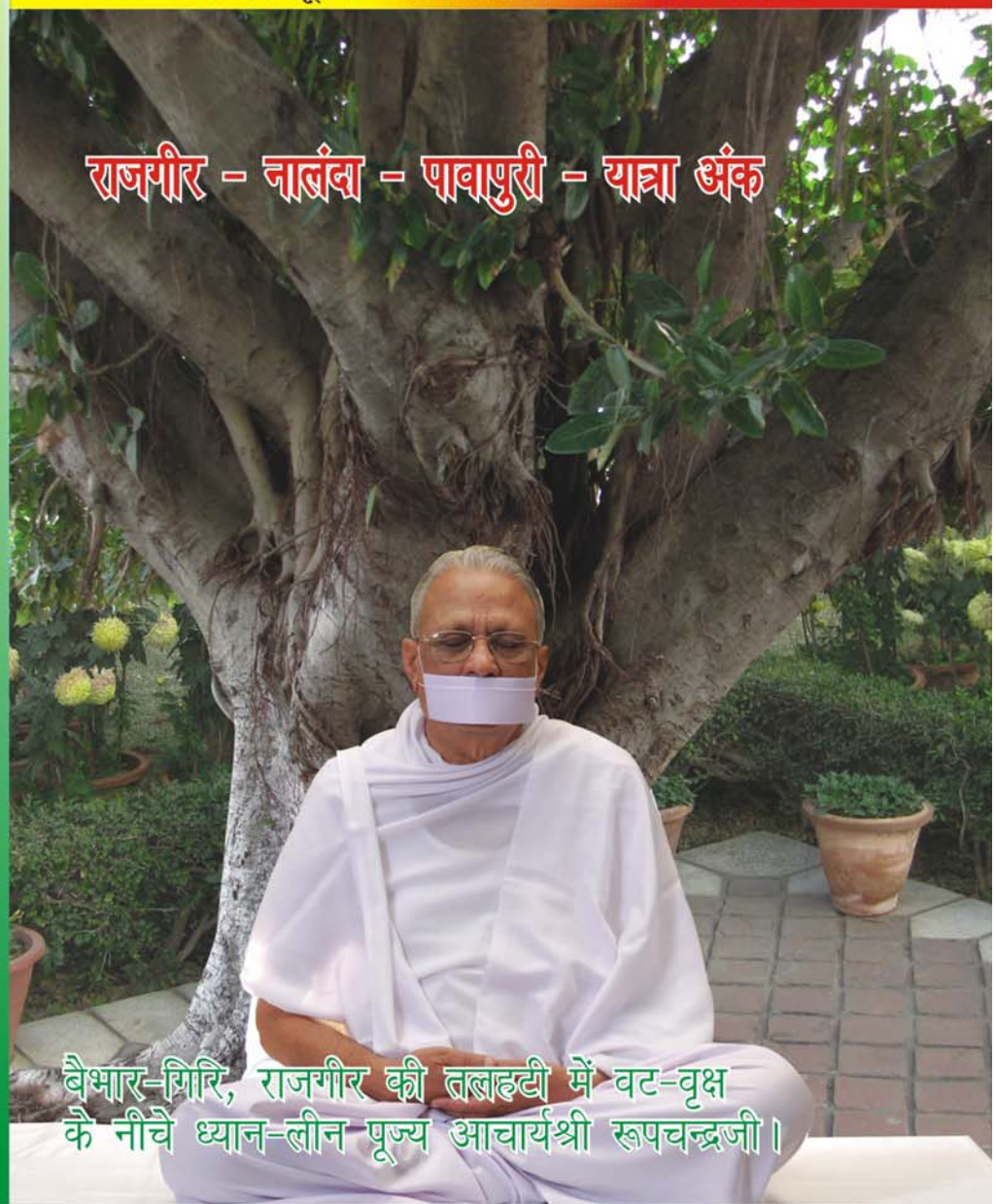

बैभार-गिरि, राजगीर की तलहटी में वट-वृक्ष के नीचे ध्यान-लीन पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 10 **अंक : 05** **मई, 2010**

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: सह सम्पादक :
श्री मनोज कुमार

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. संपादकीय - 6
04. परिक्रमा - 7
05. स्वास्थ्य - 24
06. प्रेरणा - 25
07. समाचार दर्शन - 26
08. बालें तारे - 27
09. झलकियां - 29

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब

डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष वाणी

सल्लं कामा, विसंकामा कामा आसीविसोवमा
कामेय पत्थेमाणा अकामाजंति दुग्गइं

(उत्तराध्ययन)

कामभोग शल्य के समान है, विष के समान है, आशीविष सर्प के समान है। जो काम की इच्छा करता है, वह न चाहते हुए भी दुर्गति में जाता है।

बोध-कथा

संकल्प की शक्ति

यह घटना उस समय की है जब अमंरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन नौजवान थे। वह बेहद अभावग्रस्त जीवन जी रहे रहे थे। उस समय उनके घर में दो वक्त का खाना भी मुश्किल से बन पाता था। लेकिन विपरीत परिस्थितियों में भी वह हार नही मानते थे। उन्हें पढ़ने का शौक था, पर पुस्तके खरीदने में असमर्थ थे। जब उन्हें मालूम हुआ किसी के पास कोई किताब है वह उसके पास पहुंच जाते थे। एक बार उन्हें पता चला कि उनके गांव की नदी के दूसरी छोर एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश रहते है। जिनके पास कानून की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। लिंकन कड़ाके की सर्दी में भी उस बर्फीली नदी को पार करने के लिए नाव लेकर चल पड़े। उन्होंने आधी नदी तो किसी तरह पार कर ली आगे जाकर नाव बर्फ की एक चट्टान में टकरा कर टूट गई। संकल्प के धनी लिंकन ने हार नही मानी। उन्होंने किसी तरह खुद को संभाला और अनेक मुश्किलों का सामना करते हुए नदी पार कर ली। वह ढूढ़ते हुए जज के घर जा पहुंचे। जज साहब उन्हें घर मे मिल गए। लिंकन ने उन्हें पुस्तकें दिखाने का कहा। उन दिनों जज का नौकर छुटटी पर गया था। उन्हें अनेक परेशानियों का सामना करना पड रहा था। उन्होंने लिंकन को पुस्तकें इस शर्त पर दिखाना मंजूर किया कि उन्हें उनके नौकर आने तक कार्य संभालना होगा। लिंकन ने जज की बात स्वीकार कर ली। वह दिन भर जज का काम करते थे। जंगल से लकड़िया काट कर लाते और रात को थक हार कर आराम करने के बजाय पुस्तकें लेकर बैठ जाते। जज महोदय लिंकन की मेहनत, लगन व दृढ़ संकल्प से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने लिंकन को कई पुस्तकें उपहार में दे दी। लिंकन अपनी इसी संकल्प शक्ति के बल पर एक दिन अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

सम्पादकीय

तीर्थ यात्रा और हम

हमारे जीवन में तीर्थ यात्रा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है सभी धर्मों के लोग चाहे वे हिन्दू, जैन या बौद्व हैं, इतना ही नही चाहे ईसाई या मुस्लिम है। सभी धर्मानुयायी अपने अपने पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा करने के इच्छुक रहते हैं। अपने अपने आराध्यों इष्ट देवों का सान्निध्य पाने के लिए उत्सुक रहते हैं। लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि तीर्थयात्रा का मतलब क्या है? जहां जाने से व्यक्ति का आंतरिक और बाह्य शोधन होता है वह स्थान तीर्थ है। तीर्यते अनेन इति तीर्थ- जहां से हम तैर सकते है वह तीर्थ है। जैसे सागर या नदी को पार करना हो तो उसमें उतरने का रास्ता चाहिए। उस स्थान को घाट कहा जाता है। घाट से सागर या नदी में उतर कर तैर सकते है। घाट हमारे तैरने का निमित्त है। निमित्त का सहारा लेकर हम पार पहुंच जाते हैं, जिस जगह हमारे आराध्यों के मन्दिर होते हैं, जहां बैठ कर एकाग्र मन से अपने इष्ट देवों का स्मरण करते है, उनके गुणों का मनन करते है, ऐसे स्थानों पर जाने पर मन को शांति मिलती है, मन प्रसन्न होता है। बहुत सारे लोग मंदिरों में न जाकर अपने पूजनीय साधुओं के सान्निध्य में जाते हैं, गुरूओं के पास जाते हैं। उसे भी तीर्थयात्रा मानते है। तीर्थ यात्रा दो तरह की होती है। द्रव्य यात्रा और भाव यात्रा। इसे बाह्य यात्रा या आंतरिक यात्रा भी कह सकते हैं जिसमें अपने गुरूओं के मुख से अपने देवों के गुणों का वर्णन सुनते है। गुरूओं के साक्षात् दर्शन होते है इसे भी अपनी तीर्थयात्रा मानते है। भाव यात्रा का सम्बन्ध अपनी आंतरिक भावना से है। वह चाहे कही बैठ कर कर लें। किन्तु बाह्य यात्रा में तीर्थ हमारे निमित्त बनते है। भगवान महावीर ने साधु साध्वी श्रावक श्राविका इन चारों को भी तीर्थ माना है। क्यों कि इन चारों की आराधना करने से भी व्यक्ति का कल्याण होता है। जिसके लिए जो मार्ग सुगम हो, उसी को अपनाकर अपना कल्याण करें। अपने आराध्यों को नमन करें। परन्तु भगवान की पूजा प्रार्थना किसी मांग को लेकर नही, बिल्कुल निस्पृह भाव से भगवान के गुणों को याद करे या भगवान के तद्रूप को पाने के लिए भगवान की शरण लें। जो पूजा, प्रतिष्ठा, नाम, यश पाने के लिए तीर्थ यात्रा पर जाते हैं वे तीर्थ यात्रा के असली फल से वंचित रह जाते हैं।

<u>तीर्थयात्रा के आनुषांगिक लाभ</u>

तीर्थ यात्रा पर जाने वाले लोग अनेक तरह के अनुभवों से गुजरते हैं। बहुत सारे ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी मिलती है। नाना स्थानों की सभ्यता, संस्कृति से परिचित होते हैं। तीर्थ स्थलों की चित्रकला, स्थापत्यकला और कोरनी भी देखने लायक होती है। ऐसे बहुत सारे लाभ तीर्थ यात्रा के साथ जुड़े हुए हैं।

○ निर्मला पुगलिया

मेरी राजगीर-नालंदा-पावापुरी-यात्रा

○ डा. विनीता गुप्ता

दूर-दूर फैली है घाटी अंत कहां है?
नीचे माटी ऊपर माटी अंत कहां है?
दौड़ रहें हैं पागल मृग जंगल दर जंगल
खड़ा कबीरा लिए लुकाठी अंत कहां है?

सचमुच मैं शब्दों की अनंत घाटी में लिए लुकाठी खड़ी थी, सूझ नही रहा था, अंत कहां है। तभी पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी का ध्यान किया और ध्यान के साथ ही आधुनिक यंत्र मोबाइल का इस्तेमाल करते हुए अपनी समस्या बताई- गुरूदेव जी आपने राजगीर में इतना लम्बा समय साधना, अध्ययन और तपस्या में बिताया। आपकी साधना स्थली के बारे में यह सुना है कि वह प्राकृतिक और आध्यात्मिक सौंदर्य से भरपूर है। लेकिन यहां बैठे-बैठे उस सौंदर्य, उस अनुभूति को शब्दों में कैसे उतारू बिना देखे? क्या गुरूदेव जी, आपके साथ राजगीर यात्रा का योग नहीं बन सकता? ताकि उन स्थलों का, उन चट्टानों, गुफाओं, पर्वत शिखरों का साक्षात् किया जा सके। जहां आपने तपस्या की और भ्रमण किया। बस मेरे इस प्रश्न के उत्तर में गुरूदेव जी की कृपा हुई और गुरूदेव जी के साथ तीर्थ धाम पावापुरी राजगीर और नालंदा यात्रा का कार्यक्रम बन गया, वह भी मात्र दस दिन के भीतर भीतर।

11 फरवरी 2010 को सराय कालेखां स्थित मानव मन्दिर मिशन आश्रम से सायं साढ़े तीन बजे मंगल पाठ, भगवान महावीर की जय, परमपूज्य गुरूदेव रूपचन्द्र जी की जय, के साथ कारों का काफिला नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन की ओर बढ़ चला। हमारे साथ राजगीर जाने वालो में गुरूदेव जी के शिष्य सौरभ मुनि जी, आश्रम के व्यवस्थापक श्री अरूण तिवारी जी, और गुरूदेव श्री के भक्त और प्रतिष्ठित चार्टर्ड एकाउन्टेट श्री एस.के. झा। बाकी कई लोग हमें विदा करने स्टेशन तक जा रहे थे।

यूं तो पत्रकारिता के 22 वर्ष के लम्बे दौर में रिपोर्टिंग आदि करते हुए सागर की अतल गइराइयों का अहसास कराते अंडमान निकोबार से लेकर हिमालय के अनंत विस्तार और ऊंचाइयों की अनुभूति कराने वाले सियाचिन ग्लेशियर तक लगभग पूरे भारत की यात्रा की, लेकिन गुरूदेव जी के साथ यात्रा के दैवीय संयोग को जीवन की अनूठी उपलब्धि ही

कहा जाएगा। आश्रम से नई दिल्ली स्टेशन जाते हुए सोचती जा रही थी अगर गुरूदेव जी के जीवन पर आधारित उपन्यास "चदरिया झीनी रे झीनी" लिखने का सौभाग्य मुझें न मिला होता तो यह सुखद संयोग भी न होता। और उपन्यास के शब्दों की अनंत घाटी के आधे रास्ते पर अचानक कदम रूक न गए होते तो...।

अचानक ब्रेक के साथ कार रूकी। हमें राजधानी एक्सप्रेस लेने के लिए प्लेटफार्म की ओर बढ़ना था। प्लेटफार्म पर अपार भीड़ थी। संत के बाने में श्वेत वस्त्रधारी मुखवस्त्रिका पहने गुरूदेव जी और सौरभ मुनि जी को दूर से ही पहचाना जा सकता था। संत का सिर्फ बाना ही नहीं मुख पर दैवीय आभा भी, सैकड़ों अनजान नजरें गुरूदेव जी के प्रति श्रद्धा से एक बार जरूर झुकीं। हमारे देश ने चाहे कितनी वैज्ञानिक प्रगति कर ली हो, पश्चिम से चाहे आम आदमी के कितनी ही तेज आंधियां आएं लेकिन आज भी आम आदमी की देवी देवताओं और संतों मुनियों के प्रति इतनी गहरी आस्था हैं कि चाहे अनचाहे उन्हें साक्षात या उनकी प्रतिमा या चित्र देख श्रद्धा से सिर झुक ही जाता है।

प्लेटफार्म पर ही हम लोग प्रतीक्षा कर रहे थे श्री पारख जी की। मैंने कभी उन्हें देखा नहीं था। बस सुना था कि पुरानी दिल्ली के बड़े व्यवसायी होने के साथ-साथ समाज सेवी और कर्म योगी है पारख जी। गुरूदेव जी ने बताया था कि राजगीर में वीरायतन संस्थान जहां हम ठहरेंगे उस संस्थान के संस्थापक-निर्देशकों में एक रहे हैं पारख जी। सुबह ही जम्मू से लौटे हैं और अब हमारे साथ चलने को तैयार हैं। ट्रेन चलने में थोड़ी देर रह गई थी। तभी अरूण जी ने कहा कि वे रहे पारख जी। पांच फुट नौ इंच के लगभग कद, छरहरा शरीर, कश्मीरियों की तरह गुलाबीपन। उम्र की चुगली खाती चेहरे की झुर्रिया भी गोरे गुलाबीपन को ढांक नही पाई थी। एक हाथ में बड़ा सा सूटकेस दूसरे हाथ में तीन चार पालिबैग। पारख जी किसी और बोगी में और हम चारों किसी और बोगी में। गाड़ी पटरियों पर सरकने लगी थी। वातानुकूलित एयर कंडीशन होने की वजह से बाहर का शोर शराबा पता नहीं चल रहा था। गुरूदेव जी ने अरूण जी से कहा कि भोला, जा पारख जी को देख आ, ठीक से बैठ गए क्या? अभी गुरूदेव जी का वाक्य भी पूरा नहीं हुआ था कि पारख जी हमारी सीट के पास आ गए- गुरूदेव आप सब ठीक ठाक से बैठ गए क्या? मैं देखने आया हूं। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं। वे हमारी खैर पूछने आए। इस उम्र में उनका हौसला देख मन में बार बार यह पंक्ति दोहरा रही थी कि साठ साल नहीं अस्सी साल के बूढ़े या अस्सी के जवान। और मैने प्रश्न पूछ ही लिया- पारख जी आपकी उम्र कितनी

होगी? जबाब मिला अभी तो मैं बच्चा हूं यह वाक्य कहते हुऐ उनके चेहरे पर बाल सुलभ शरारत मासूमियत और मुस्कान बिखर गई थी 87-88 साल के बुजुर्ग की मुसकान में घुल मिली हम लोगों की हंसी भागती दौड़ती रेल की गड़गड़ाहट में साफ सुनी जा सकती थी।

अगली भोर यानी 12 फरवरी को महाशिव रात्रि के दिन हम लोग पटना जंक्सन स्टेशन उतरे। प्लेटफार्म पर दो मंजिल ऊपर स्थित प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालय में स्नानादि के बाद बाहर खड़ी टाटा सूमो में जाने के लिए निकले तो झा साहब के हाथ में राजधानी एक्सप्रेस की एक तौलिया थी जो गल्ती से हममें से किसी सामान में आ गई थी। झा साहब इसे सही जगह पर लौटाना चाहते थे। प्रतीक्षालय के बाहर अटेडेंट से पूछा उसने कहा मुझे दे दो मै दे दूंगा। लेकिन झा साहब को यकीन नहीं हुआ। वे सही जगह ढूंढ़ने गए। दस मिनट लग गए लेकिन व्यक्ति और स्थान नहीं मिला हम तौलिया लेकर बाहर गए यह सोचकर कि लौटते समय वापस कर देंगे। आज के समय में जब कि लोग सरकारी सम्पत्ति को अपनी निजी सम्पत्ति मानकर हथियाने की जुगत भिड़ाते हैं। ऐसे मे झा साहब जैसे बिरले लोग उसे लौटाने के लिए परेशान दिखाई देते हैं। स्टेशन परिसर में बाहर गुरूदेव जी के परम भक्त समस्तीपुर (बिहार) निवासी और दिल्ली और बंगलौर के व्यवसायी समाज सेवी श्री सुभाष तिवारी जी द्वारा भेजी गई टाटा सूमो तैयार खड़ी थी। सवा सात बजे के करीब हम लोग पटना से पावापुरी के लिए रवाना हुए। ड्राइवर जीतू यादव के साथ आगे सीट पर झा साहब और अरूण तिवारी जी। बीच वाली सीट पर सौरभ मुनि जी, बीच में गुरूदेव जी और फिर खिड़की के पास पारख जी। पीछे दोनों सीटो पर सबका लगेज और मै। दरअसल पारख जी जबरन पीछे बैठना चाहते थे सामान के साथ लेकिन उनकी कद काठी और उम्र के हिसाब से पीछे बैठना निश्चित ही कष्टदायक होता। गुरूदेव जी के काफी कहने पर वे उनके साथ बैठे और पीछे सामान के साथ अपना एक छत्र सम्राज्य मेरा था।

लगभग एक घंटा चलने के बाद चाय पानी के लिए गाड़ी किसी कस्बे में रूकी। अरूण जी और झा साहब ने तो महाशिवरात्रि का व्रत रखा था। पारख जी ने पोली बैग में रखा अपने नाश्ते का पिटारा खोल दिया। सबने चाय आदि ली। मेरे लिए एक गिलास दूध अरूण जी ले आए। दूध क्या, समझें चौथाई गिलास दूध और बाकी पानी। लेकिन साथ लाए चीले और चटनी ने फीके धुले दूध की भरपाई कर दी।

साढ़े दस बजे के करीब बिहार शरीफ पहुंचे। झा साहब बोले इस जगह का नाम तो है बिहार शरीफ और सबसे ज्यादा बदमाशी यहां होती है। गुरूदेव जी ने अपने पैंतीस साल

पहले के बिहार शरीफ के अनुभव सुनाए, जब वे यहां के एक कालेज में प्रवचन के लिए आए थे। और एक छात्र शरारत पूर्ण ढंग से God की बजाय Dog में प्रयुक्त अक्षरों को मंत्र रूप में जपने की बात करने लगा, जिससे वातावरण पूरी तरह से उपहासमय हो गया था और तब गुरूदेव जी ने कहा अक्षर तो वही है और हर अक्षर मंत्र है। आप God की बजाय Dog का जाप भी कर सकते हैं, लेकिन एक बात का ध्यान रखें कि हम जिसका जाप करते हैं उसके जैसा होना चाहते हैं। वे वृत्तियां हमारे भीतर आने लगती है। अब खुद सोच लें कि आप क्या बनना चाहते है God या ---" गुरूदेव जी यह प्रसंग बता रहे थे और हमारी टाटा सूमो तेज रफतार से बिहार शरीफ की सड़कों पर दौड़ रही थी। बस्ती में रफतार कुछ कम हो गई क्योंकि बाजार खुल गए थे और दुकानें सड़कों पर उतर आयी थीं। दुकानों पर लटके केलों के पीले पीले गुच्छे बड़े आकर्षित कर रहे थे।

हमारा लक्ष्य था पुण्य तीर्थस्थल पावापुरी। बिहार शरीफ पार किया पता चला कि पावापुरी अब यहां से ग्यारह किलोमीटर दूर है। लगभग पैंतालीस मिनट में हम भगवान महावीर की निर्वाण स्थली पावापुरी पहुंच गए। गाड़ी एक कस्बे की सी सड़कों पर चलती जा रही थी। सहसा गुरूदेव जी ने कहा कि देखिए विनीता जी! वो सामने जलराशि लहरा रही है। यह है पावापुरी का प्रसिद्व जलमन्दिर। यहीं भगवान महावीर का अंतिम संस्कार हुआ था। गुरूदेव जी द्वारा संकेतित जलराशि की ओर देखा सचमुच गांव के विशाल घेरे में सरोवर के मध्य मन्दिर बहुत भव्य लग रहा था। सात मिनट में हम मन्दिर के मुख्य द्वार पर पहुंच गए। लाल पत्थरों से बने मुख्य द्वार के बाहर चार पांच दुकानों में सफेद संगमरमर जैसी दिखने वाली देवी देवताओं की मूर्तियां और पूजा पाठ का दूसरा समान बिक रहा था। एकाध ठेले पर चाट मिठाई आदि भी थी। प्रसाद स्वरूप मन्दिर में चढ़ाने के लिए अरूण जी ने फल लिए और मुख्य द्वार से प्रवेश किया। द्वार से मन्दिर तक जाने के लिए सरोवर के बीच बने लगभग छः फुट चौड़े और छः सौ फुट लम्बे श्वेत संगमरमर के पत्थरों से बने पुल को पार करते हुए हम मुख्य मन्दिर यानी गर्भ गृह में पहुंचे। गर्भ गृह के तीनों द्वार चार फुट ऊंचे ही हैं। जिससे झुककर ही प्रवेश करना होता है। भीतर तीन वेदियां हैं मध्य वाली वेदी में भगवान महावीर स्वामी जी की चरण पादुकाऐं बनी है उसके दायीं ओर की वेदी में उनके प्रमुख गणधर गौतम स्वामी तथा बायीं ओर की वेदी में एक अन्य गणधर सुधर्मा स्वामी की चरण पादुकाऐं हैं। वेदियां स्वर्णमंडित हैं। तीनों चरण पादुकाओं पर चढ़ाऐ गए गुड़हल के लाल फूल शोभायमान थे। गुरूदेव जी के साथ एक एक करके हम

लोगों ने गर्भ गृह में प्रवेश किया वेदियों के सामने नतमस्तक हम सब। गुरूदेव जी के मुख से ओम् उच्चारण के साथ ओम् अर्हम् ओम् अर्हम् नाद गर्भ गृह की दीवारों को पार करते हुए विशाल सरोवर के जल में छोटी बड़ी मछलियों को सत्संग कराने के बाद लहरों में विलीन हो जाते है। यही वह पुण्य स्थान है जहां भगवान महावीर का अंतिम संस्कार हुआ था। कहते हैं पहले यह सरोवर 84 बीघे में फैला था लेकिन समय के साथ साथ यह भरता गया और अब केवल दो फलांग लम्बा व लगभग इतना ही चौडा रह गया है। एक किंवदंती के अनुसार भगवान के निर्वाण के समय समतल क्षेत्र था और उस समय यहां उपस्थित जनसमूह ने भाव विहाल हो इस स्थान की धूल मस्तक पर धारण करने के लिए केवल एक एक चुटकी धूल ली। पर श्रद्धालुओं की भीड़ इतनी अधिक थी कि एक एक चुटकी धूल लेने से यह सरोवर बन गया। सरोवर के मध्य बने श्वेत संगमरमर का मन्दिर का निर्माण ढाई हजार वर्ष पूर्व नन्दिवर्धन नामक राजा ने कराया था। उन्होंने इसकी नींव सोने की ईंटों से रखी थी। कुछ वर्ष पूर्व मन्दिर के जीर्णोद्धार के समय प्रकाश में आयी बड़ी बड़ी ईंटे इसके ढाई हजार वर्ष प्राचीन होने का प्रमाण देती हैं। संगमरमर के पत्थर बाद में सुंदरता की दृष्टि से लगाए गए। अब तो गर्भ गृह के चारों ओर संगमरमर का भव्य बरामदा और चबूतरा है। बरामदे में कंगूरेदार स्तम्भ अद्भुत सौदर्य की पुष्टि करते हैं। गर्भगृह के मुख्य द्वार के सामने चौड़ी सीढ़ियां हैं करीब दस मीटर आगे जाकर सीढ़ियां सरोवर में उतर जाती हैं। गुरूदेव जी उन्हीं सीढ़ियों से सरोवर तक गए। एक क्षण के लिए सीढ़ियों के पास बने संगमरमर के स्तम्भ पर बने सिंह शावक को दुलारने लगे तो मेरे कैमरे ने झट से उन क्षणों को कैद कर लिया। भव्य समवशरण मन्दिर यहीं से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित श्री समवशरण मन्दिर के सौंदर्य के बारे में सुना था। जब वहां पहुंचे तो भव्यता देखकर ठगे से रह गए। भगवान के प्रथम व अंतिम समवशरण के स्थान पर श्वेताम्बर समाज द्वारा इस भवन कलापूर्ण मन्दिर का निर्माण किया गया है। प्रथम सभवशरण के साक्षी स्तूप व कुआं आदि भी उसी प्रकार दृष्टि गोचर होते हैं। श्वेत संगमरमर में बना यह मन्दिर संपूर्ण भारत में अपनी तरह का संभवतः एक मात्र मन्दिर है। इसमें चौमुख भगवान महावीर की प्रतिमाऐं विराजमान हैं। मन्दिर के चारों ओर देव परिषद मनुष्य पेड़ पौधे जलचर वनचर और नभचर के जीव जन्तु कठोर पत्थर में जिस जीवंतता से उकेरे गए हैं। वह कारीगरों के कौशल का नमूना है। पुजारी बताते है कि इन सबको उकेरने के पीछे भाव यह है कि जब समवशरण होता था तब भगवान महावीर की देशना प्रवचन सुनने के लिए देव, नर पशु, पक्षी आदि एकत्रित होते थे।

अब हमें गांव मन्दिर की ओर प्रस्थान करना था। पावापुरी कस्बे में जल मन्दिर से एक किलोमीटर दूर बस्ती के बीच में है वह स्थल, जिसे गांव मन्दिर कहते हैं। भीतर और बाहर से मंदिर की छटा देखकर इसकी प्राचीनता का आभास होता है। मान्यता है कि यहीं भगवान महावीर ने अंतिम वर्षावास किया था। अंतिम श्वास ली थी और अपनी भौतिक देह त्यागी थी। कई सीढ़ियां चढ़कर मन्दिर में प्रवेश करते हैं तो दृष्टि छत पर की गई खूबसूरत नक्कासी की ओर जाती है। सामने प्रभु के दर्शन और भीतर प्रस्तर में स्थापित भगवान महावीर के पावन चरण के दर्शन करके आसीम आनंद के सागर में डूबते उतराते हुए मदिर से बाहर आते हैं। हरीतिमा बिखेरते घने पेड़ पौधे और लताऐं तथा उमड़ते घुमड़ते बादल मन को पावन गंगा बना देते हैं। मंन्दिर परिसर में सवा सौ कक्षों वाली दो मंजिल विशाल धर्मशाला। गुरूदेव जी के आने की सूचना यहां के व्यवस्थापकों को पहले से ही थी। गुरूदेव जी के लिए दूसरी मंजिल पर वही 108 नं कमरा खोल दिया गया जिसमें पैंतीस साल पहले उन्होंने 15 दिनों तक प्रवास किया था। धर्मशाला में इतने भव्य साज सज्जा वाले कमरे की कल्पना नही थी। साढ़े बारह बज रहे थे। नाश्ता तैयार था। तीन बड़े बड़े कैस रोलों में आटे का महकता गर्म-गर्म हलवा, चिड़वा का पोहा और उपमा एक कटोरे में चटनी फलास्क में चाय और साथ में एक पैकेट नमकीन का। बाहर झमाझम बारिश में गर्म गर्म नाश्ते का स्वाद कुछ ज्यादा ही बढ़ गया था और व्यवस्था प्रमुख श्री गीतम मिश्रा जी का आतिथेय भाव सोने में सुहागा।

बारिश थी कि रूकने का नाम नहीं ले रहीं थी। गुरूदेव जी ने कहा कि दो बजे यहां से निकलेंगे तब तक थोड़ा विश्राम कर लें। मौसम में खासी ठंड बढ़ गई थी। अगले कमरे यानी 109 न. कमरे में पलंग पर लेटी तो हल्की गर्माहट और थकान से नींद आ गई। यह वही शाल था जो सुबह सुबह गुरूदेव जी ने प्लेटफार्म पर मुझे प्रसाद स्वरूप दिया था। आश्रम से बड़े महाराज जी साध्वी मंजुला श्री जी ने महरूम रंग का यह शाल मेरे लिए भेजा था। और प्रतीक्षालय के ठंडे पानी से स्नान के बाद कंपकंपाते हुए जब गुरूदेव जी द्वारा प्रदत्त प्रसाद शाल ओढ़ी तो शाल की गरमी के साथ मां जी की ममता और स्नेह की गरमाहट भी मुझे भीतर तक महसूस हुई। बारिश थम गई थी। दो बजे हम सब लोग धर्मशाला के मुख्य द्वार पर थे। देश भर से पावापुरी आये अनेक श्रद्धालु गण गुरूदेव जी से आर्शीवाद लेने के लिए हमसे पहले ही एकत्र थे। गुरूदेव जी ने मंगल पाठ किया और हम सब वापस सूमो में अपनी अपनी जगह बैठ गए। मुझे चिंता थी कि अगर शाम हो गई

तो नालंदा के खडहरों की फोटो नहीं खींच पाऊंगी। हालांकि पावापुरी से नालंदा 25 किलोमीटर दूर था लेकिन नालंदा दर्शन की साध वर्षो से मन में थी। सूमो तेजी से नालंदा की ओर बढ रही थी ।

पारख जी चाहते थे कि हम लोग कुंडलपुर जरूर चलें। नालंदा से एक किलोमीटर दूर ही तो है। हम लोग कुंडलपुर पहुंचे यहां दिगम्बर पंथ की गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी द्वारा मन्दिर का निर्माण हुआ है। यहां भगवान महावीर की श्वेत संगमरमर की चार फुट की प्रतिमा दर्शनीय है। ऐतिहासिक धरोहर नालंदा चार बजे के लगभग हम पहुंचे। बादल काफी कुछ छंट चुके थे। आसमान साफ था लेकिन कभी कभार इक्का दुक्का बादलों का टुकड़ा चहल कदमी करते हुए सूरज को ढक लेता था। नालंदा पहुंचे टिकट ली। बाहर से ही खंडहर दिखे। मन बल्लियों उछलने लग गया फोटो लेने के लिए। कैमरा निकाला तो गुरूदेव जी ने टोका। भीतर असीम संपदा बिखरी है। आगे चले तो मुख्य द्वार से करीब 100 मीटर चलते हुए चार फुट चौड़े और लगभग सात आठ फुट ऊंचे दरवाजे तक पहुंचे, भीतर प्रवेश किया तो आंखे फटी की फटी रह गई। दायीं ओर खंडहरों की ओर जमीन में धंसे बिना छतों के कमरों की कतार। आगे बढ़ रहे थे कि एक गाइड आया गुरूदेव जी ने अरूण जी से कहा कि इसे साथ ले लेते हैं। और फिर गाइड हमारे साथ हो लिया ये होस्टल के कमरे हैं। एक कमरे में एक छात्र रहा करता था। हर कमरे में हवा पानी की उचित व्यवस्था आप देख सकते हैं। दस किलोमीटर क्षेत्र में फैले नालंदा विश्वविद्यालय में एक साथ दस हजार विद्यार्थी और देश विदेश से आए 1500 आचार्य प्रोफेसर रहते थे। सबके रहने खाने आदि की व्यवस्था पूर्णतः निशुल्क थी। कई छात्र और प्रोफेसर आजीवन यहीं रहकर अध्ययन और अध्यापन करते थे। उनकी मृत्यु होने पर यहीं उनकी समाधि बना दी जाती थी। ये आप बड़े चबूतरे देख रहे हैं यह आचार्यों की समाधियां हैं। और छोटे चबूतरे छात्रों की समाधियां हैं। गाइड बताते हुए हमें दूर तक फैली लाल पत्थर की काली पड़ गई समाधियों के बीच ले आया था। पूरा विश्वविद्यालय कभी लाल ईटों, पत्थरों का रहा होगा। लेकिन हजारों साल से आंधी पानी धूप भूकंप चक्रवात झेलते-झेलते इनका रंग ही बदल गया। वक्त की मार ने कई भवनों का अस्तित्व ही मिटा दिया। जैसे गाइड बताता है कि आज तक इस विद्यालय के मुख्य द्वार का पता नही चल सका है। ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मुख्य द्वार पर प्रवेशार्थी विद्यार्थियों की परीक्षा ली जाती थी। उस परीक्षक का नाम द्वार-पंडित होता था। वह शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित होता था। द्वार पर प्रवेशार्थियों का

तांता लगा रहता था। ह्वेन सांग के अनुसार वहां आने वाले 15 में से केवल 3 विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिल पाता था। यहां केवल स्नातकोत्तर यानी पोस्ट ग्रेजुएट स्तर तक की ही पढ़ाई ही होती थी।

गुरूदेव जी के साथ साथ हम खंडहरों के बीच आगे बढ़ते चले जा रहे थे। सामने एक जगह जापानी फिल्म प्रोडक्सन ने कैमरा लगाया हुआ था। शूटिंग चल रही थी। टीम के लोग इधर उधर बिखरे हुए थे। कैमरे के सामने हवेन सांग की वेशभूषा में एक जापानी अभिनेता खंडहरों पर चल रहा था। यहां शूटिंग तो चलती ही रहती है। गाइड ने हमारा ध्यान दूसरी ओर खींचा। यह लेक्चर हाल है। यहां प्लेट फार्म पर खड़े हो कर प्राचार्य लेक्चर देते थे। इस प्रकार के अनेक लेक्चर हाल हैं।

सीढ़ियां पुस्तकालय की है। नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए भी विश्व प्रसिद्व था। पुस्तकालयों का तो यहां एक मोहल्ला सा बन गया था। जिसे धर्म गंज कहते थे। धर्मगंज में रत्नासागर रत्नोदधि और रत्न रब्जक नामक तीन प्रमुख पुस्तकालय थे। रत्नसागर का भवन नौ मंजिला था, जिसमें अनेक दुर्लभ विश्व-विख्यात शास्त्र थे। लेकिन मुगलों के शासनकाल में विश्व की दुर्लभ ज्ञान राशि को आग हवाले कर दिया गया। बताते हैं कि पुस्तकालयों में छः महीनों तक आग बुझी नहीं। इतनी किताबें थीं यहां। पुस्तकालय की सीढ़ियों पर खड़े खड़े विदीर्ण मन तुर्को की बर्बरता और अपने पूर्वजों की विवशता वा कायरता पर आठ-आठ आंसू रो रहा था। इन सीढ़ियों के सामने ही नालंदा का विश्व विख्यात स्तूप दिखाई दे रहा था अपनी भव्यता और ध्वंश की कहानी कहता। स्तूप का फोटो ले रही थी कि तभी आसमान के आगे बादलों का झुण्ड आ गया उसने सूरज की रोशनी को ढंक लिया। क्या यह संकेत नहीं कि विश्व में भारत की दमकती ज्ञान राशि को तुर्को के अंधकार ने कुछ काल के लिए ही डंस लिया था। डंस ही नही लिया था अपना ग्रास बना लिया था। एक प्रचलित शेर याद आ गया। खंडहर बता रहे हैं कि इमारत बुलंद थी। धर्म दर्शन कला इतिहास तर्कशास्त्र मेडिकल ज्योतिष वेदों आदि की शिक्षा के केन्द्र रहे नालंदा के खडहरों को नमन करते हुए हम फिर उसी द्वार से बाहर आ गए।

अब हमारा काफिला नव नालंदा महा बिहार की ओर बढ़ चला था। जिसे नालंदा पालि इन्स्टीटयूट के नाम से जाना जाता है। 20 नवम्बर 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने उसकी स्थापना की थी। गुरूदेव जी के जीवन में नव नालंदा का बहुत ही महत्व रहा है। यहां रहकर उन्होने काफी अध्ययन किया। यहां के पुस्तकालय के सामने

iz;k

ही उनका प्रवास कक्ष था। संस्थान में अध्ययन हेतु अनेक विद्यार्थी और विद्वान यहां प्रवास करते है।

नव नालंदा परिसर का वातावरण पूर्णतः अध्ययन के अनुकूल है। चारों ओर साफ सफाई, कूड़ा करकट समेटने के लिए जगह जगह पर बतखें, कछुऐ। कूड़ेदानों को इन जीवों की शक्ल देकर आकर्षक बनाया गया है। ये दूर से ही आमंत्रित करते हैं। परिसर में पीछे की ओर अपनी भव्यता में दमकता थाई मन्दिर है। मन्दिर शिखर के पीछे ढलता सूरज अपनी लालिमा बिखेर रहा था। सांझ हो चुकी थी। हमें राजगीर में वीरायतन पहुंचना था। लगभग एक घंटे में हम राजगीर पहुंचे ।

झुटपुटा अंधेरा हो चला था। रोशनी की झलक भर बाकी थी। जैसे ही गाड़ी वीरायतन के प्रांगण में रूकी। दो तीन महिलाऐं एयरपोर्ट जैसी लगेज ट्राली लेकर सामान ले जाने के लिए आतुर दिखी। सीधे पल्लू की साधारण सी धोती शायद यहां की स्वयं सेविकाऐं होगी। पारख जी उतर कर स्वागत कक्ष की ओर हमारे लिए स्थान के बारे में पूछने चले गए। हमारे ठहरने की व्यवस्था ध्यान कक्ष में ही की गई थीं। इसे नाम दिया गया है चिदम्बरम्। दो कमरों की कुटिया। बाहर बरामदा जैसा और बरामदे के आगे बरगद का विशाल वृक्ष जैसे बरसों से ध्यानस्थ ऋषि। यह वही स्थान है जहां वीरायतन के संस्थापक उपाध्याय कवि अमर मुनि ध्यान किया करते थे। 1973 में वीरायतन के रूप में उनके द्वारा बोया गया सेवा साधना और कला का यह बीज आज विशाल वृक्ष का रूप ले चुका है। 40 एकड़ भूमि में फैला वीरायतन सेवा साधना का अनूठा केन्द्र बन गया है जहां देश भर के श्रद्वालु आते हैं। इसकी स्थापना के प्रारंभिक सोपान के साक्षी रहे है गुरूदेव जी। अपने राजगीर प्रवास के समय वे दस दिन वीरायतन में भी रहे थे। यहां लगे विपश्यना ध्यान शिविर में आपने भाग लिया था।

सात बजे तक सामान आदि रखकर हमें शीघ्र ही भोजनालय पहुंचना था। जैन परम्परा के अनुसार सूर्यास्त के पूर्व आहार लेना होता है। वीरायतन में भी सायं भोजन का समय 5 से 6 बजे ही है। गुरूदेव जी सौरभ मुनि जी कक्ष में ही रहे। बाकी हम सब भोजनालय की ओर चल दिए। आज हमारे लिए विशेष व्यवस्था के चलते इस समय तक भोजन था। बड़े से कक्ष में एक साथ 50-60 लोगों के लिए भोजन, मेज कुर्सियां। एक मेज पर बड़े बड़े भगोनों में भोजन साफ सुथरा शुद्व शाकाहारी भोजन। भोजनालय से निकले तो देखा कि वीरायतन लैम्प पोस्टों की दूधिया रोशनी में अपनी छटा विखेर रहा था। उसी दूधिया

रोशनी में श्वेत वस्त्रों में गुरूदेव जी और सौरभ मुनि जी सामने आते दिखाई दिए। और कुछ लोग भी उनके साथ थे। हम भी गुरूदेव जी के साथ भ्रमण करने लगे। तभी पारख जी ने एक युवती को टोका- अरे गुड़िया! प्रणाम, पारख जी आप कैसे हैं, ठीक हूं। पर जल्दी जल्दी कहां जा रही हो? पारख जी ने पूछा। आपरेशन करके आई थी। पेसेंट की हालत देखने फिर हॉस्पीटल जा रही हूं- गुड़िया ने उत्तर दिया।

सचमुच किसी गुड़िया की तरह मासूमियत और स्निग्धता समेटे, अच्छी कद काठी की छरहरी देह वाली जींस कुर्ता पहने शाल ओढ़े भीतरी और बाहरी सौदर्य से परिपूर्ण गुड़िया के रूप में हमारा पहला परिचय था डा. स्मिता बागरेचा से। नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. स्मिता आस्ट्रेलिया में रहती है। लेकिन साल में तीन चार महीने वीरायतन में निशुल्क सेवाऐं प्रदान करती हैं। आस्ट्रेलिया जाने से पहले वीरायतन मे ही थीं और अपना वेतन संस्था में सेवा कार्यो के लिए ही दे देती थीं। डा. स्मिता के बारे में पारख जी से इतना जानने के बाद उनके बारे मे और जानने की जिज्ञासा हुई।

आज जहां दुनिया पैसे की होड़ में जाने कहां से कहां भाग रही है, क्या क्या नहीं कर रही है अपनों का खून तक भी। उसी दुनिया में डा. स्मिता जैसे निस्वार्थ सेवी लोग भी है। दो पंक्तियां जेहन में घूमने लगी-

टूटे हुए लोगो को उम्मीदे नई देते हुए।
लोग हैं कुछ जिंदगी को जिंदगी देते हुए।।

हम सब लोग कुटियानुमा ध्यान कक्ष में आ गए। वहां सब लोगों के लिए सोने की जगह नहीं थी। झा साहब और अरूण जी के सोने की व्यवस्था कहीं और की गयी थी। गुरूदेव जी और सौरभ मुनि जी के लिए भीतर वाला कमरा। बाहर वाले कमरे में मैंने जमीन पर गद्दा बिछाकर अपने लिए जगह बना ली। पारख जी के लिए तख्त की व्यवस्था थी। उस पावन स्थल पर भूमि शयन में कैसा असीम आनन्द चारों और शान्त आध्यातमिकता का वातावरण अच्छी खासी ठंडी थी। दो कंबल ओढने पर ही राहत मिल पायी। हमेशा की तरह जैसे कि आदत है भोर में चार बजे उठना हुआ। स्नान आदि का विचार था लेकिन लग रहा था खट खट से कहीं गुरूदेव जी की नींद न खुल जाये आंखिर असमंजस में भटककर उस घड़ी में दरवाजा खोला मध्यम रोशनी में दबे पांव स्नानघर की और जा रही थी कि अद्भुत दृश्य देखा- गुरूदेव जी पद्मासन में आंखें मुदे ध्यान लीन बैठे थे। पहली बार किसी ध्यानस्थ ऋषि के दर्शन किये। मेरा परम सौभाग्य। ठंडे पानी से ही स्नानादि

करके साढ़े पांच बजे जूते मोजे पहन करके प्रातः भ्रमण के लिए कुटिया से बाहर निकली चिड़ियों की चहचाहट, कोयल की कुहुक, ठंडी हवा, घना अंधेरा, लेकिन रास्ता दिखाते वीरायतन के दूधिया रोशनी वाले लैंप मेरे कदम बढते चले गये। आस पास पेड़-पौधों के बीच ईटों से बने हुए रास्ते पर चलते चलते गोलाकार स्वागत कक्ष के पास पहुंची और उसकी परिक्रमा करते हुए वापस रास्ता खोजा। लेकिन रास्ते में से रास्ते निकलते गये। स्वागत कक्ष से निकलने वाले सारे रास्ते एक जैसे ही हैं। अंधेरे में पता नहीं लगा। लेकिन परिक्रमा में खोयेंगे कहां। चलते-चलते वापस अपने पथ पर आ गये। पूर्व में पौं फटने लगी थी। फूलों और पौधों के रंग स्पष्ट होने लगे थे। दो चार और लोग मोंनिंग वाक् करते हुए दिखाई देने लगे। कुटिया के पीछे से प्रार्थना के स्वर गूंजे-

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं णमों उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

जेब से मोबाइल निकाल कर देखा ठीक छः बजे थे। फिर संगीत भजन के स्वर ''वीर को बंदन करें महावीर को बंदन, ज्ञान का ले दीप कर में शील का चंदन''। धीरे-धीरे सूर्य देवता अपने आगमन की दस्तक देने लगे थे। फूलों की पंखुड़ियों और घास पर पड़ी ओस की बूंदे साफ दिखाई देने लगी थी। इसके साथ ही प्रकट होने लगा था राजगीर का प्राकृतिक वैभव। ऊपर नजर घुमाई। चारों ओर ऊंचे ऊंचे पर्वत ही पर्वत। पर्वत और बादलों की लुका छिपी थी। पीछे से सूरज की किरणें फूलों की पंखुड़िया पर पड़ने लगी थी। भजन अब भी चल रहा था और मेरे कदम कुटिया की ओर।

गुरूदेव जी अब भी ध्यान मुद्रा में थे। सौरभ मुनि जी भी उठ गए थे। पारख जी नदारद थे। कुछ देर बाद गुरूदेव जी ध्यान से उठे। चरण बंदना में मेरा मस्तक झुक गया। ऊं स्वस्ति- गुरूदेव जी का हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा।

हमें गरम पानी के कुण्डों की ओर जाना था। जो कि राजगीर की पहाड़ियों की जग प्रसिद्व थाती है। झा साहब कुंडों में स्नान के मूड में थे और मेरा मन फोटोग्राफी में। अरूण जी की कुंड में स्नान के लिए कोई रूचि नहीं थी। वीरायतन से मुश्किल से एक किलोमीटर की दूरी पर है गर्म पानी के 22 पवित्र कुंड। सवा सात बजे हम वहां पहुंचे। वैभार पर्वत चढ़ना शुरू किया इसी पर्वत के निचले हिस्से में है ये कुंड या कहें कि उष्ण जल के स्रोत। महाभारत में इनका उल्लेख तापदा के रूप में मिलता है। पौराणिक कथाओं में इन्हें ब्रह्मा

का ताप कहा गया है। वायु पुराण के अनुसार इनमें स्नान का पुण्य गंगा नदी में एक साल नहाने के पुण्य के बराबर है। ये कुण्ड केवल तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को ही नहीं, बीमारों और अपाहिजों को भी आकृष्ट करते हैं। कहते हैं कि इस जल में स्नान से चर्म रोग दूर हो जाते है। महिलाओं एवं पुरूषों के लिए अलग-अलग स्नान गृह हैं जिसमें पानी सात धारा या सात झरनों में से आता है जिनका स्रोत ऊपर पहाड़ी पर स्थित सप्तपर्णी गुफाऐं मानी जाती है। इनमें सबसे ज्यादा गर्म पानी ब्रह्मकुंण्ड का है जो धरातल से 20-25 फीट गहराई में है। झा साहब ब्रह्मकुण्ड में पुण्य लाभ लेने पहुंच गए। मुझे फोटोग्राफी करनी थी। एक छोटे से दरवाजे से तीन फुट चौड़ी लगभग 15 सीढ़ियां उतर कुंड में पहुंचते है। स्नानार्थियों के साथ गर्म पानी से निकल रही भाप कैमरे की जद में थी। लेकिन फोकस करना मुश्किल था। मनचाहे फोटो लेने के बाद कैमरा और हमारा सामान दरवाजे के पास खड़े अरूण जी को थमा कर मै भी कुण्ड में उतर गई। पानी सचमुच गर्म था। सलवार पूरी तरह भीग गई थी, संभालते-संभालते कुर्ता भी थोड़ा। बहुत पुण्य लाभ के लिए कुंड के जल से पूरा सिर भिगो लिया। कुंड में दस पन्द्रह से ज्यादा लोग एक साथ स्नान नहीं कर सकते हैं। पंडे आचमन पूजन के लिए जबरन पीछे पड़ गए। मैंने खुद ही वहां लगी प्रतिमा पर जल चढ़ाया और खुरदरी सीढ़ियां चढ़ते हुए वापस आ गई। गर्म पानी की गरमी काफूर हो चुकी थी। ठंडी हवा तीर की तरह चुभ रही थी। सिर और कपड़े आधे से ज्यादा गीले। पोंछने के लिए कुछ नहीं था। झा साहब भी बाहर निकल आए थे।

बाहर सिंदूर आदि बिक रहा था। तुरंत अपने ड्राइवर श्री बृजकिशोर मिश्रा जी की पत्नी शशि और बहू कल्पना का ध्यान आया। दोनों के लिए एक एक सिंदूर की डिब्बी खरीदी और हम लोग सीधे वीरायतन के लिए रवाना हो लिए। गुरूदेव जी और सौरभ मुनि जी आहार ले चुके थे। हम तीनों ने भोजनालय में जल्दी जल्दी नाश्ता किया। वहीं भेंट विदिशा मध्य प्रदेश से आए बागरेचा दम्पत्ति से हुई। बात चीत में पता चला कि डा. स्मिता इन्हीं की बेटी हैं और ये दोनों बेटी से मिलने राजगीर आए हैं। डा. खुशहाल बागरेचा बिदिशा के जाने माने फिजीशियन हैं। पति पत्नी दोनों धार्मिक वृत्ति और सेवा भाव वाले। गुरूदेव जी के आगमन की बात पता चली। पारख जी ने ही उन्हें बता दिया था। पारख जी इस परिवार से बहुत पहले से ही परिचित हैं श्रीमती बागरेचा अपनी दोनों बेटियों की बात कर रही थीं उन्होंने डा. स्मिता की वीतरागी वृत्ति के बारे में बताया। एक ओर अपने प्रोफेशन में माहिर और दूसरी ओर संत सी वृत्ति, ऐसी बेटी की मां को प्रणाम करने को मन हुआ ।

भोजनालय से बाहर डा. स्मिता गुरूदेव जी से बात करती हुई मिलीं। मैंने सबको अपने कैमरे में कैद कर लिया और हम सब लोग रवाना हो गए गुरूदेव जी के साथ राजगीर के उन स्थलों की ओर जहां पैंतीस साल पहले गुरूदेव जी ने प्रवास किया था। ये सामने हैं विपुल गिरि, गुरूदेव जी ने बताया। सामने ऊंचे विपुल गिरि का वैभव दिख रहा था। पर्वतों पर हरियाली नहीं थी लेकिन अद्‌भुत दृश्य। आज से पैंतीस साल पहले हम यूं ही आधा पौना घंटे में चोटी तक पहुंच जाते थे। कई बार तो मैने शिखर पर ही प्रवास ध्यान आदि किया। गुरूदेव जी बता रहे थे और मेरी कल्पना में पंगडंडियों में पहाड़ के रास्ते पार करते हुए युवा मुनि रूपचंद्र साकार हो रहे थे। थोड़ी देर में हमारी गाड़ी वैभार गिरि की तलहटी में स्थित प्रसिद्व सोन भंडार गुफाओं के पास रूकी। पर्वत के पास कई गुफाऐं हैं। लेकिन अब एक दो ही देखी जा सकती हैं। बड़े चबूतरे को पार कर हम गुफा में प्रवेश करते हैं। गुफा के द्वार से भीतर रोशनी प्रवेश कर रही थी। जिससे इसकी दीवारों पर खुदी लिपि और भगवान महावीर का चित्र साफ दिखाई देता है। बाईं ओर पत्थर दीवार में ही तीन-चार फुट का एक दरवाजा ढका दिखाई देता है और दरवाजे के निशान के ऊपर थोड़ा गड्‌ढा और आस पास कालापन। गाइड बताता है- कहते हैं कि इस दरवाजे के पीछे सोने का खजाना है। मुगलकाल में इस दरवाजे को तोप से उड़ाने की कोशिश हुई। लेकिन कामयाबी न मिली। यह चट्‌टान बहुत कड़ी है। एक बार वैज्ञानिक डा. जगदीश चन्द बोस यहां आए थे। उन्होंने पत्थरों की जांच कर बताया कि यह यह चट्‌टान सिर्फ डाइनामाइट से ही तोड़ी जा सकती है। लेकिन ऐसा करना बेहद खतरनाक होगा। जैसे ही डाइनामाइट का विस्फोट होगा, पूरे इलाके में ज्वालामुखी फट जाएगा। क्योंकि यहां जमीन के नीचे गंधक और अमोनियम नाइट्रेड के भंडार हैं। अब समझ आया इस इलाके में गर्म कुंडों का राज। वहां सांव लिपि खुदी हुई है। पास वाली गुफा में पहुंचे तो देखा दीवार पर उकेरे भगवान महावीर और बुद्व की क्षत-विक्षत प्रतिमाऐं। आततायी तुर्कों ने भारतीय संस्कृति को, हमारे आस्था बिन्दुओं को नष्ट करने के लिए भारत का कोई कोना नहीं छोड़ा। गुवाहाटी (असम) के कामाख्या देवी मन्दिर से लेकर नालंदा और दिल्ली के कुतुबमीनार तक में मुस्लिम बर्बरता के प्रमाण देखे जा सकते हैं। यहां के शिलालेखों से पता चलता है कि इस गुफा का निर्माण एक जैन मुनि ने 3-4 ईसा पूर्व में करवाया था। गुफाओं की दीवारों पर जैन तीर्थकरों की मूर्तियां इस बात का प्रमाण है।

सोन भंडार गुफाओं से लौटते हुए हम मनियार मठ पर रूके। यह एक बेलनाकार मन्दिर है जो राजगृही (राजगीर) के देवता मणि नाग के पूजन के उद्देश्य से बनाया गया था। मगध के लोग नागों को उदार देवता मानते, जिन्हें पूजा द्वारा संतुष्ट करने पर वे वर्षा

करते थे। यहां की खुदाई में ऐसे बहुत से पात्र निकले हैं जिनमें सांप के फन की आकृति के कई नलके बने हैं। संभवतः इन पात्रों से सांपों को दूध चढ़ाया जाता था। विशाल गड्‌ढों में जानवरों के कंकाल भी मिले हैं। जिन्हें देखकर लगता है कि शायद यहां नरबलि भी हुआ करती थी। मनियार मठ के चारों ओर खंडहर बिखरे हैं। दस पन्द्रह मिनट मनियार मठ में बिताने के बाद हम गृध्र-कूट पर्वत की ओर चले।

भगवान बुद्व ने अपने जीवन काल में कई वर्ष यहां बिताए थे। बुद्वत्व प्राप्ति के 16 साल बाद गौतम बुद्व ने यहां पर 5 हजार बौद्व भिक्षु भिक्षुणिओं एवं जनसाधारण तथा बोधिसत्व की सभा में दूसरे धर्म चक्र प्रवर्तन का सिद्वांत लिया था। गृध्र-कूट पर्वत के बगल में विशाल रत्नगिरि पर्वत है। यहां जापान के बौद्व संघ द्वारा बनाया गया 160 फुट ऊंचा शांति स्तूप है इस स्तूप के उद्‌घाटन के समय आयोजित समारोह के साक्षी स्वयं गुरूदेव जी बने थे। गुरूदेव जी से इसके बारे में जानने के बाद स्तूप तक पहुंचने की जिज्ञासा और प्रबल हो गई थी। आधा घंटे मे हम वहां पहुंच गए जहां से रोप वे (रज्जु मार्ग) और सीढ़ियों द्वारा शिखर पर पहुंचा जाता है। जब रोप वे के पास पहुंचे तो पता चला कि वह खराब है। जैसे वज्रपात हो गया। शिखर तक पैदल जाने की न ताकत बची थी न समय ही था। सूनी सूनी आंखों से ऊपर हवा में झूलते खामोश उड़न खटोले को देर तक निहारती रही। कोई चारा नहीं था। उदास मन देखकर अरूण जी फ्रूटी की बोतल ले आए। वहां दुकानों से छुट-पुट सामान खरीदा और बैरंग लिफाफे की तरह लौट आए।

अब हमारा लक्ष्य था वह स्थान जहां गुरूदेव जी ने अपना 1974 का चतुर्मास बिताया था और उसके बाद भी कई महीनों तक अध्ययन लेखन सृजन किया था। रास्ते में हम बिम्बसार की जेल पर रूके। साठ वर्गमीटर के चबूतरा नुमा इस क्षेत्र के चारो ओर दो मीटर चौड़ी दीवार है और इसके कोने पर वृत्ताकार बुर्ज दिखाई देते हैं। इसी स्थान को बिम्बसार की जेल कहा जाता है। जहां उनके पुत्र अजात शत्रु ने उन्हें बन्दी बनाकर रखा था। राजा ने अपने बन्दी जीवन के लिए इस जगह को चुना था। क्योंकि वे यहां से गृध्रकूट पर्वत की चोटी पर भगवान बुद्व के दर्शन कर पाते थे। खुदाई से निकले इसके फर्श पर लोहे के कड़े से इसके कारागार होने का प्रमाण मिलता है।

हमारी गाड़ी राजगीर के पहाड़ी रास्तों से होती हुई नगर के परकोटे में प्रवेश कर चुकी थी। पुराना राजगीर नगर पत्थरों की मोटी दीवार से घिरा हुआ है। ये दीवारें लगभग 40-48 किलोमीटर तक पहाड़ियों की ऊंचाइयों के साथ-साथ फैली हैं। राजगीर के प्राचीनतम खंडहरों में एक यह भी है। दीवार का बाहरी भाग तीन-पांच फुट तक लम्बे विशाल बिना तराशे पत्थरों को सावधानी से आपस में जोड़कर बनाया गया है। जबकि उनके

बीच की दरारों को पत्थरों एवं रोड़ी से भरा गया है। बाण गंगा सुरंग के पूरब एवं पश्चिम किले की दीवारों की ऊंचाई सबसे अधिक 11-12 तक है। बांकी सोनगिरि वैभारगिरि विपुलगिरि उदयगिरि और रत्नागिरि की दीवारें काफी घिस गई हैं। शायद ही कहीं 7-8 फुट ऊंची हैं। चहारदीवारी की खासियत इसके भीतरी भाग में बनी सीढ़िया या ढाल है जिनके जरिये दीवार पर चढ़ा जा सकता है।

खैर! दीवार के द्वार से प्राचीन राजगृह नगर में प्रवेश किया और भीतर जाकर जैन श्वेताम्बर लाल मंदिर के सामने हम उतरे, इसे नौलखा मंदिर भी कहते हैं। करीब 25-30 सीढ़ियां चढ़ने के बाद गुरूदेव जी के पीछे हमने मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश किया। सामने नक्काशी के बीच काले पत्थर में भगवान महावीर की पद्मासन में ध्यान मुद्रा में चार फुट की प्रतिमा अत्यंत भव्य है। गुरूदेव जी प्रतिमा के सामने बैठ गए। उनके मुख से 'महावीर स्वामी नयन पथ गामी भवतु' में प्रार्थना के सुर निकले। हम उनकी सुमधुर लय-बद्व वाणी का अनुसरण करने लगे। इसके बाद गुरूदेव जी ने सौरभ मुनि जी से भजन गाने के लिए कहा। एक बार फिर उनके चिर परिचित स्वर में यह भजन 'वीर ऐसे बसो मेरे मन में, कोई देखे न तुमको हममें' भक्ति रस में भिगो गया। गर्भगृह की छत पर नक्काशी देखने लायक है और अन्य चार मंडपों की वास्तुकला भव्य। गुरूदेव जी अपने राजगीर प्रवास मे यहां अक्सर आया करते थे। सिर्फ 40 कदम दूर दायीं ओर ही था उनका प्रवास स्थल। गुरूदेव जी से जानकारी मिली और उनके साथ साथ मंदिर की सीढ़िया उतर कर बायीं ओर नीचे गुफा सी में प्रवेश कर गए। भीतर गए तो चारों ओर अपना और प्रभु का प्रतिबिम्ब। यह कांच का मंदिर ज्यादा पुराना नहीं है। जब हम यहां रहते थे तब नहीं था। गुरूदेव जी ने जानकारी दी। दर्शन और प्रार्थना के बाद बाहर निकल कर हम मंदिर के दायीं ओर बनी विशाल धर्मशाला की सीढ़ियां चढ़ने लगे। यह श्वेताम्बर जैन कोठी के नाम से जानी जाती है। भीतर कतारबद्व दो मंजिले कमरे। बीच में बड़ा सा आंगन। मुख्य द्वार से थोड़ा ही आगे गुरूदेव जी की अगवानी के लिए श्री जयंती बाबू उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजू बाई जैन और पुत्र श्री गौतम जैन तथा शहर के प्रतिष्ठित जन पहले से मौजूद थे। बड़े श्रद्वा भाव से गुरूदेव जी को प्रणाम किया। मंजू बाई जी और जयंती बाबू वेहद विनम्र हंसमुख और अपनत्व भरे। गुरूदेव जी के राजगीर प्रवास के समय इनकी बड़ी सेवाएं रहीं। दोंनों से मिलकर बहुत अच्छा लगा। 15 मिनट वहां रूकने के बाद हम उस जगह पर पहुंचे, जहां गुरूदेव जी ने कई माह तक प्रवास किया था। यह श्वेतांबर जैन कोठी का अतिथि भवन है जिसमें अतिथियों के लिए तीन तीन कमरों वाले अतिथि गृह है। गुरूदेव जी के पीछे पीछे सीढ़ियां चढ़ते हुए हम पहली मंजिल पर तक पहुंचे जहां उन्होंने प्रवास करते हुए साधना तपस्या

अध्ययन और सृजन में एक लम्बा समय बिताया था। छोटे से इस कमरे की खिड़की से पीछे बस्ती के घर दिखाई देते हैं। यहीं गुरूदेव जी ने कार्लमार्क्स की 'दास कैपिटल' पढ़ी और सुना है मैंने आयुष्मन नामक पुस्तक लिखी। उस समय उनका लक्ष्य सारा जीवन राजगीर में ही अध्ययन, साधना करते हुए व्यतीत करने का था। लेकिन नियति को कुछ और मंजूर था। अपने गुरूदेव आचार्यश्री तुलसी का आदेश कैसे टालते? गुरू-आदेश पर तेरापंथ संघ के विशिष्ट कार्य हेतु यह लक्ष्य त्यागना पड़ा। उस वक्त की हजारों स्मृतियों में डूब-उतरा रहे थे गुरूदेव जी।

अब वापस वीरायतन पहुंचने की तैयारी थी। पारख जी की प्रतीक्षा में हम सब मंदिर वाली गली के बाहर सूमो में बैठे हुए थे। सामने लम्बी लम्बी बल्लियों में डोली! और डोली उठाने वाले! पूछा इन डोलियों में बैठ कर श्रद्वालुजन पावन तीर्थ राजगीर की पहाड़ियों पर स्थित 22 जैन मन्दिरों के दर्शन करने जाते हैं। चार लोग एक डोली को उठाते हैं। व्यक्ति के भार के हिसाब से किराया तय होता है। फिर भी कम से कम 800 रूपये तो है ही, ज्यादा से ज्यादा 1200-1500 भी हो सकता है। भोर में चार बजे निकलते हैं और सांझ होते होते वापस लौट आते हैं।

इन मन्दिरों तक पहुंचना आसान नहीं है। इसलिए लोग डोली से यात्रा का पुण्य लाभ लेते हैं। लेकिन ट्रेकिंग के शौकीन व्यक्तियों के लिए ये रास्ते बहुत आकर्षक है। जब तक पारख जी लौटे तब तक एक डोली वाले से हमारी बात चीत भी खत्म हो चुकी थी। यूं हुआ समय का सदुपयोग।

वीरायतन लौटते लौटते पांच बज चुके थे। हम लोग सीधे भोजनालय पहुंचे। नाश्ता के बाद सीधा भोजन। आज भोजनालय में काफी लोग थे। मुम्बई, अहमदाबाद, राजस्थान, से आए कई लोगों से परिचय हुआ। सबके साथ खिचड़ी, पापड़, घी, आंवले का आचार का आनंद लिया। भोजन के बाद गुरूदेव जी के साथ वीरायतन में ब्राह्मी कला दीर्घा में झांकियों के माध्यम से जैन कथाओं और भगवान महावीर जीवन से जुड़े प्रसंगों की जानकारी ली। कलाकारी का बेजोड़ नमूना पेश करती हैं झांकियां। मोतियों आदि से बड़ी खूबसूरती से भव्य महलों की संरचना की गई है।

शाम तक थकान काफी हो चुकी थी। सीधे कुटिया की ओर रूख किया। मुझ पर सर्दी का असर दिखाई देने लगा था। तेज जुकाम, छीकें, बैठना, लेटना सब मुश्किल था। गुरूदेव जी अपने कमरे में बागरेचा दंपति और डा. स्मिता के साथ विपश्यना ध्यान विधि पर चर्चा में व्यस्त हो गए। मैंने कम्बल विस्तर की शरण ली। तबियत बेहद खराब हो गई थी। रात को डा. स्मिता अपने कमरे से मेरे लिए गिलास में हल्दी मिला गर्म दूध लेकर आयी। बड़ी

राहत मिली। अगले दिन भोर में हॉस्पीटल में डा. स्मिता के बाथरूम में गीजर के गर्म पानी से स्नान किया। उस स्नेही परिवार से मिलकर बहुत अच्छा लगा। पता चला कि डा. स्मिता अप्रैल में आस्ट्रेलिया चली जाएगी और उनके मम्मी पापा अगले हफते विदिशा लौट जाएगें।

अब राजगीर से विदाई की बेला थी। पौराणिक महाभारतकालीन ऐतिहासिक पांच पहाड़ियों से घिरा राजगीर स्मृतियों में अमिट रेखाओं की तरह बस गया था। यहीं पर लिखा हुआ गुरूदेवजी का मुक्तक भीतर-भीतर गूंज रहा था-

तेरा मन पावन गंगा है डुबकी लेलूं,
इन्द्र धनुष-सा सतरंगा है डुबकी लेलूं।
अम्बर में लिपटा भी तेरा रूप दिगम्बर
नील गगन सा यह नंगा है डुबकी लेलूं।।

रात को पटना से हमें राजधानी पकड़नी थी। राजगीर से दूरी तो सिर्फ 60 किलोमीटर ही थी लेकिन ट्रेफिक जाम आदि के खतरे से बचने के लिए जल्दी ही निकल लिए। अच्छा ही हुआ। क्योंकि बिहार शरीफ में हमारी गाड़ी पंचर हो गई। काफी समय उसे ठीक करने में लगा। फिर आगे जाकर भीषण जाम में फंस गए। सुबह साढ़े दस बजे से निकले हुए शाम को साढ़े तीन बजे के करीब गुरूद्वारा पटना साहिब पहुंचे। सिखों के दशम गुरू श्री गुरू गोविंद सिहं जी का जन्म स्थान पटना साहिब पुण्य तीर्थ स्थल कहलाता है। यहां के प्रमुख पाठी जी ने गुरूदेव जी, सौरभ मुनि और पारख जी को केसरिया पटका पहनाया। गुरू ग्रन्थ साहिब सहित कई ऐतिहासिक वस्तुओं के दर्शन किए, कड़ाह प्रसाद लिया और वहां से रवाना हुए। सबको भूख लग रही थी सूर्यास्त पहले से आहार करना था। अच्छा शुद्व आहार झा साहब ने खोज लिया। अब राजगीर यात्रा के अंतिम पड़ाव पटना रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। पता चला कि ट्रेन चार घंटा लेट। राजधानी के इतना लेट होने की उम्मीद नहीं थी। खैर प्रतीक्षा की घड़िया प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालय में हंसते गाते हुए काटी। यहा से हमारा और पारख जी का रास्ता अलग हो चला था उन्हें जलगांव (महाराष्ट्र) में अपने समधी से मिलने जाना था और हमे वापस अपने कर्मस्थल दिल्ली की ओर। ट्रेन आने में थोड़ा समय रह गया था कि इस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में मेरी छात्रा शालिनी की मम्मी श्रीमती सुमन रंजन मिलने आई। हम लोग अपना लगेज उठाकर निकल ही रहे थे। कुछ सामान उन्होंने पकड़ा और हमें ट्रेन में बिठा नीचे उतरी। ट्रेन पटरी पर रेंगने लगी थी दिल्ली की दिशा में ...।

(आलेख तथा छायांकन - डॉ विनीता गुप्ता
सहयोगी - अरूण तिवारी)

तमाम रोगों की दवा है बेल

बेल एक प्रसिद्व फल है। वह देश के लगभग सभी भागों में पाया जाता है। मई और जून के महीने में फल देने लगता है। बेल का वृक्ष प्रायः जंगलों में पाया जाता है। अब इसे बागों में भी उगाया जाता है। बेल के वृक्ष की उंचाई लगभग बीस पच्चीस फुट होती है बेल के पत्तों में तीन पत्रक होते हैं पत्रों के बीच में कांटे होते हैं फरवरी माह में इस वृक्ष पर फूल आने शुरू हो जाते हैं बेल के फूल सफेद अथवा हल्के हरे रंग के छोटे मोटे गुच्छों में बड़े सुगंध लिए होते हैं। इसका फल गोल तथा बड़ी गेंद के आकार का होता है। फल का छिलका कठोर होता है। पकने पर यह हल्के नारंगी रंग का हो जाता है। पका हुआ बेल सुगंधित होता है। इसका गूदा पीला होता है। इसके बीच सफेद रंग के होते हैं। ग्रथों में बेल को रसायन का नाम दिया गया है। यूनानी चिकित्सकों का मत है कि बेल पाचक और शक्तिवर्द्वक फल है इसके व्यापक गुणों से विदेशी डाक्टर भी प्रभावित हुए है। डा. डीमक लिखते हैं कि बेल रक्तशोधक और पौष्टिक फल है। डा.ग्रीन का कहना है कि बेल का सर्बत नित्य सुबह पीने से अजीर्ण नष्ट हो जाता है। इस दृष्टि से बेल का प्रत्येक भाग कल्याणकारी होता है। इसकी पत्तियां शिव जी पर चढ़ाई जाती है। पदम् पुराण में वर्णन है कि मंदार पर्वत जाते हुए पार्वती के पसीने की बूंद से बिल्ब (बेल) नामक वृक्ष की उत्पत्ति हुई। कारण कुछ भी रहा हो किन्तु यह सत्य है कि बेल का वृक्ष वातावरण को अरोग्यपूर्ण बनाता है इसके फल का स्वाद बहुत मधुर और शीतलता प्रदान करने वाला है। बेल का फल लकड़ी हमारे लिए बहुत उपयोगी है। इसके फल में कैलिशयम फारफोरस कार्बोहाटेड आदि तत्व पाए जाते हैं। बेल स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी फल है। पेट और आंतो के लिए बहुत ही उपयोगी है। सुखे गूदे का चूर्ण सुबह पानी के साथ लेने से भूख को बढ़ाता है। गले की पीड़ा को शांत करता है। बेल का शरबत मुरब्बा गर्मियों में बहुत ही उपयोगी है। वह घावों के अतिशीघ्र भरता है। इसका गूदा पुष्टिकारक है। बेल की लकड़ियां हवन के काम आती हैं। राम वनवास के समय पंचवटी में जिन पाचं प्रमुख वृक्षों का वर्णन मिलता है। उनमें से बेल एक है।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी (योगाचार्य)

जीवन की पाठशाला से कुछ सबक

○ कमलेश भारतीय

जीवन की पाठशाला से बड़ी कोई पाठशाला नही। कितने भी बड़े विश्वविद्यालय क्यो न हों लेकिन जीवन की पाठशाला से मिले सबक सदा याद रहते है। हर किसी के जीवन में ऐसे मौके आते हैं जब जीवन की किसी मोड़ पर कोई सबक उसे मिल जाता है। पिता की मृत्यु के बाद अपने गांव की हवेली में सर्दी की ठिठुरन से बचने के लिए हाथ सेकतें वक्त हमारे नौकर से ज्यादा परिवारिक सदस्य अधिक भगतराम ने एक सीख दी थी। एक गरीब परिवार का मुखिया अपने दो बेटियों की शादी में बड़ी हवेली से मदद की उम्मीद लेकर आया था। मैने मना किया तो भगतराम ने कहा- बेटा अपने लिए तो सब जीते हैं। कोशिश करो कि दूसरों के काम आ सको। उम्र छोटी थी सीख बड़ी। आज भी किसी जरूरत मंद को सामने पाता हूं तो लगता है कि भगतराम की सीख कानों में गूंज रही है। जितना बन पाता है उतना अवश्य करता हूं और उस दिन में जो संतोष होता है वह कभी कभी नसीब होता है। दादी मां की सीख भी अक्सर याद आती है वे कहा करती थी कि देना सीखना, लेना नहीं। उनके अनुसार देने में सुख है लेने में नहीं। देने का फल मीठा होता है जब कि मांगने का फल कभी कडुवा होता है और आदमी को अपमान का घूंट भी पीना पड़ता है। खटकड़ कलां के आदर्श स्कूल के कार्यवाहक प्राचार्य के पद पर काम करने का जब अवसर मिला, तब मोहाली में पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के उस समय के उपाध्यक्ष एवं हिन्दी विद्वान डा. प्रेमसागर शास्त्री से मिलने गया। उन्होंने सबक दिया कि बेटा कुर्सी पर जब बैठो तो यह साबित कर देना कि यह कुर्सी तुम्हारे व्यवहार एवं योग्यता से कही छोटी है और तुम इससे अधिक के हकदार हो। दूसरे विद्यालयों में बैर विरोध बड़ गया है। तुम कोशिश करना कि अपने विरोधियों को प्रेम से जीत सको। यह भी ध्यान रखना कि ताकत का उपयोग किसी काम को बिगाड़ने की बजाय काम संवारने के लिए करना। क्योंकि काम बिगाड़ना आसान है बनाने में काफी समय लगता है। मैने यही प्रयास किया और नतीजा यह मिला कि हमारा स्कूल जिला में श्रेंष्ठ घोषित हुआ। पांच हजार रूपये का पुरस्कार मिला। स्कूल छोड़ने के वर्षों बाद भी उनसे नाता जुड़ा हुआ हे।

अपनी बच्ची को स्कूल का होमवर्क करवा रहा था। उसमें एक कहानी थी। एक राजा भेष बदल कर निकलता है। खेतों में काम कर रहा किसान उसे पहेली बुझाता है। पहेली

यह है कि किसान अपनी मेहनत के एक रूपये में से चार आने उधार चुकाने में, चार उधार देने में, चार अपने व्यवसाय में तथा बाकी बचे चार आने फेंक देने में विश्वास करता है। राजा पूछता रहता है लेकिन वह पहेली का अर्थ नही खोलता। दूसरे दिन राजा किसान को अपने दरबार में बुलावा भेजता है और पहेली का अर्थ बताने का आग्रह करता हैं। किसान बताता है कि चार आने उधार चुकाने का अर्थ है वह राशि अपने मां बाप पर खर्च करता है। क्योंकि उनका ऋण उस पर है। उन्होंने पाल पोष कर उसे बड़ा किया है। इसी प्रकार वह अपने बच्चों पर चार आने खर्च कर रहा हैं वह उधार देने के समान है। बच्चे बड़े होकर चुकाएंगे या नही, यह वह नही जानता। चार आने वह अपने काम धंधे पर लगा देता है। शेष बचे चार आने फेंक देने का क्या अर्थ है? राजा ने पूछा। किसान ने कहा कि राजन् चार आने मै समाज के कामों के लिए देता हूं ताकि सामाजिक संस्थाऐं चलती रहें। फेंक देने का अर्थ है कि वापसी की कोई उम्मीद नहीं हैं। क्योंकि कल्याण के लिए दिए गए पैसे का कोई हिसाब नही रखता। राजा एक आम किसान की पहेली के अर्थो से हैरान हो गया। आज भी वह पहेली उतनी सार्थक है। देखिए और गौर कीजिए क्या हम मां बाप का ऋण उतार रहे है? क्यों हमें बच्चों को दिए चार आने वापसी की उम्मीद है? क्या हम पैसे की दौड में अंधे होकर कही असीमित होकर तो नही रह गए? क्या सामाजिक कार्यों के लिए हरसंभव सहायता देने आगे आते है? अपने अपने दिलों को टटोलिए और सुनिए आपके दिल से क्या आवाज आती है?

(वरिष्ठ स्टाफ रिपोर्टर दैनिक ट्रिब्यून)
मो. 9416047075

समाचार-दर्शन

पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी अपने सहयोगी साधु-साध्वियों के साथ जैन आश्रम नई दिल्ली में एवं सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ मानव मंदिर सुनाम में सानंद बिराजमान हैं। पूज्यवर की हरिद्वार-ऋषिकेश की विशेष यात्रा तथा अन्य समाचार विस्तार से आपको रूपरेखा के जून अंक में पढ़ने को मिलेंगे।

मासिक राशि भविष्यफल-मई 2010

○ डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेष :- मेष राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि यह माह आंशिक लाभ देने वाला है। कोध पर क्रोध पर काबू रखें। लोंग दिलासा देंगे पर समय पर काम नहीं आयेंगे। उत्तरार्ध सुधार की स्थिति में होगा। कोई नये कार्य की योजना मत बनाइयें। पारिवारिक स्थिति सामान्य रहेगी। समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

वृष :-इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से अधिक परिश्रम के पश्चात धनागमन कराने वाला है। बुजुर्गो तथा श्रेष्ठ जनों की सलाह काम आएगी। भूमि भवन के क्रय के अवसर आ सकते है। स्थान परिवर्तन अथवा कार्य स्थान परिवर्तन संभावित है। परिवारकी समस्या का समाधान निकल आएगा। नजदीक की यात्राऐं संभावित है।

मिथुन :-इस राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की ओर से कुल मिलाकर शुभ फल दायक ही कहा जाएगा। उन्नति के अवसर आऐगें, पर काफी दौड़ धूप के बाद सफलता मिलेगी। व्यस्तता अधिक रहेगी। नए परिचय से खुशी मिलेगी और उनसे सहायता भी मिलेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कर्क :-इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से कुल मिलाकर अच्छा नही कहा जाएगा। फिर भी पूर्वाद्व की अपेक्षा उत्तरार्ध में प्रगति में बाधाऐं कम आएगी। इस माह आय कम तथा व्यय अधिक होने की संभावना है। परिवार में मित्रों से अवहेलना झेलने के अवसर आ सकते है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें ।

सिहं :-इस राशि के जातकों के लिए यह माह व्यवसाय की ओर से सामान्य ही कहा जाएगा। प्रभावशाली एवं श्रेस्ठ व्यक्ति काम आएगे। आय का मार्ग प्रशस्त होगा। अपना मनोबल बनाए रखें कोई धार्मिक कार्य संभावित है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। परिवार में हल्की नोक-झोक के पश्चात सामंजस्य बना रहेगा।

कन्या :-इस राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की ओर से अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धनलाभ कराने वाला है। शत्रु अवैध कार्यों की ओर प्रेरित करेगें जिनसे आपको सचेत रहना है। विदेश से लाभ मिल सकता है। परिवार में सामंजस्य बनाए रखना कठिन प्रतीत होगा किन्तु प्रयास करते रहें। मानसिक चिन्ता रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला:- तुला के राशि के जातकों के लिए यह माह व्यवसाय-व्यापार की दृष्टि से प्रगति करने का है। आय तथा व्यय का संन्तुलन बनाएं रखें। दूरस्थ स्थान से कोई खुशी का समाचार मिल सकता है। परिवार में सामजस्य बिठाने का प्रयास करें। दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनाऐं रखें। अपने अधीनस्थों की ओर ध्यान दें। उन पर नजर बनाएं। अपने पर भी अंकुश लगाएं।

वृाश्चिक:- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से सर्तकता की अपेक्षा रखता है। अवरोधों की प्श्चात धनागमन की आशा की जा सकती है। ध्यान रहे अपनी गल्ती से कोई कार्य बिगड़ न जाए। न चाहते हुए भी यात्रा करनी पड़ सकती है। मुश्किलों का समाधान अपने अन्दर ही ढूढ़ें स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

धनु:- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से परिश्रम के पश्चात सामान्य लाभ देने वाला है। किसी मद में व्यय अधिक होने की संभावना है। साझेदारी के कामों से सचेत रहें। कोई अचानक धन लाभ का अवसर बन सकता है। विवादों से दूर रहें। भूमि भवन क्रय का प्रसंग आ सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मकर: -इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से निर्वाह योग्य धन दिलाने वाला है। सुयोग्य व्यक्तियों से सलाह लेना कारगर सिद्व होगा। कार्य के संपादन में परिश्रम से न घबराऐं। व्यस्तता अधिक रहेगी। परिवार में सामंजस्य बिठा पाएगे। चोट आदि का भय है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कुम्भ :- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय में लाभ होने की संभावना है। नई योजना के क्रियान्वन की खुशी मिल सकती है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते है। परिवारीजन सहयोग करेगे। कुछ जातकों को पदोन्नति से खुशी मिलेगी। व्यय अधिक हो सकता है। लेन देन में सावधानी बरतें स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मीन : इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धन मिलने की संभावना है। शत्रु सिर उठाएगें इन अवसरों पर आप को बड़ी समझदारी से काम करना होगा। नई योजनाएं सिर चढ़ सकती हैं। समाज में मान प्रतिष्ठा बनाएं रखने के लिए प्रयास रत रहना होगा। पारिवारिक स्थिति सामान्यतः अच्छी रहेगी।

-इति शुभम्

-बिम्बसार-जेल, राजगीर के अवशेषों के बीच पूज्य गुरूदेव।

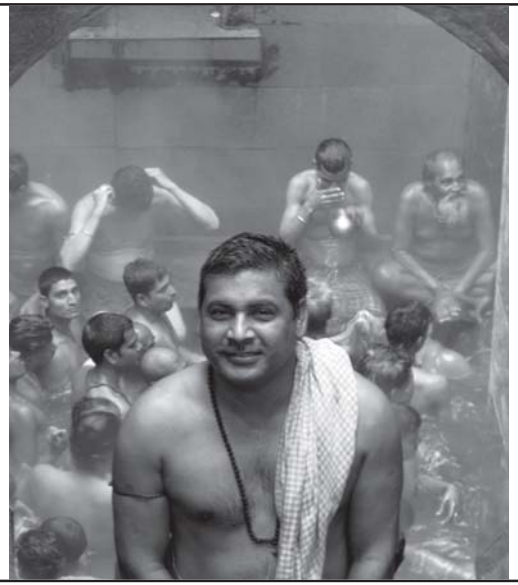

-राजगीर के गरम जल-कुंडों में स्नान का पुण्य-लाभ लेते हुए चार्टर्ड एकाउन्टेंट श्री शैलेन्द्र झा अन्य तीर्थ-यात्रियों के साथ।

-पालि रिसर्च इंस्टिट्यूट, नव नालन्दा महाविहार का पुस्तकालय-भवन जहां पूज्यवर ने अध्ययन के लिए सन् 1974 में काफी समय दिया, के समक्ष पूज्य गुरूदेव, सौरभ मुनि, पारखजी, झा जी, अरूण तिवारी आदि।

-नव नालंदा महाविहार के थाई मंदिर के समक्ष डॉ. विनीता जी, सौरभ मुनि, पूज्य गुरूदेव, झा साहब तथा अन्य।

-श्री जैन श्वेताम्बर नौलखा मंदिर राजगीर में (बांये से) अरूण तिवारी, पारखजी, विनीता जी, सौरभ मुनि, पूज्य गुरूदेव, डॉ. बागरेचा दंपति, झा साहब तथा अन्य।

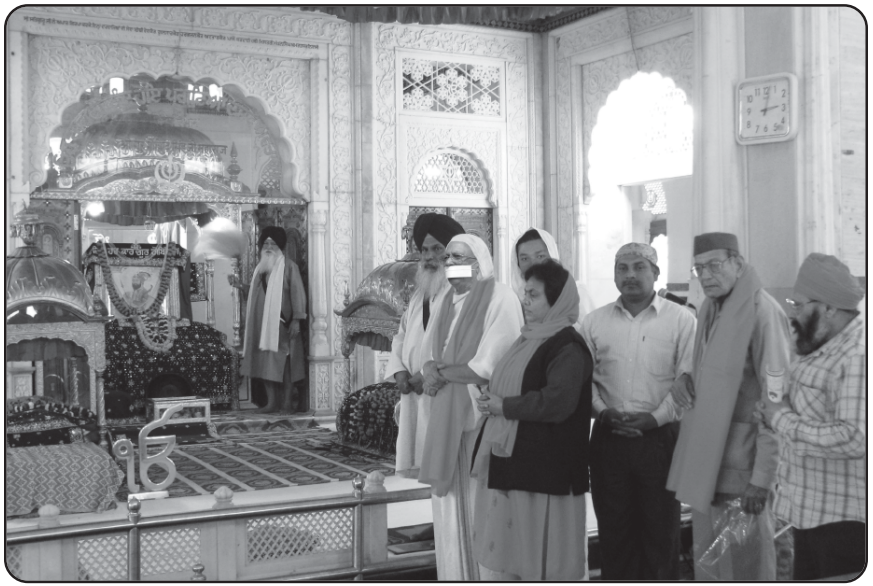

-गुरू गोविन्द सिंह की जन्म-स्थली पटना साहिब गुरूद्वारा में पाढी जी, पूज्य गुरूदेव, विनीता जी, झा साहिब, पारखजी आदि।

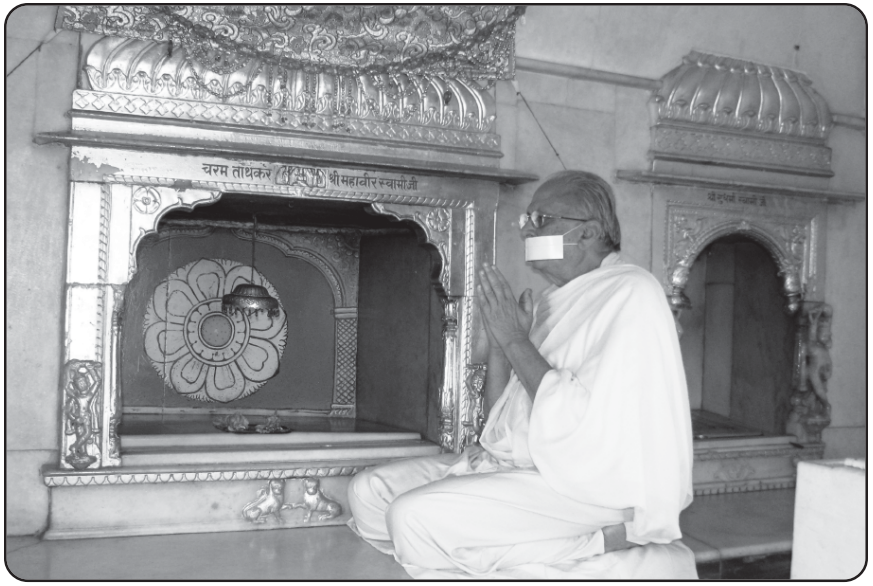

-भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् अंतिम संस्कार-स्थल पर निर्मित जल मंदिर, पावापुरी में आराधना-रत पूज्य गुरूदेव।

-श्री जैन श्वेताम्बर नौलखा मंदिर, राजगीर में महावीर-स्तुति गान करते हुए पूज्य गरूदेव।

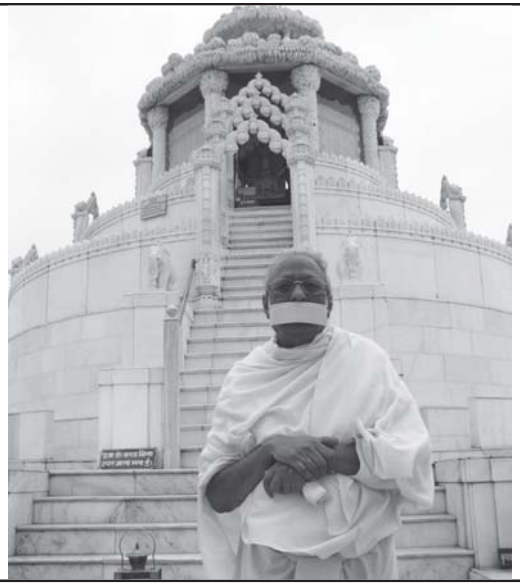

-श्री समवसरण मंदिर, पावापुरी के समक्ष पूज्य गुरूदेव।

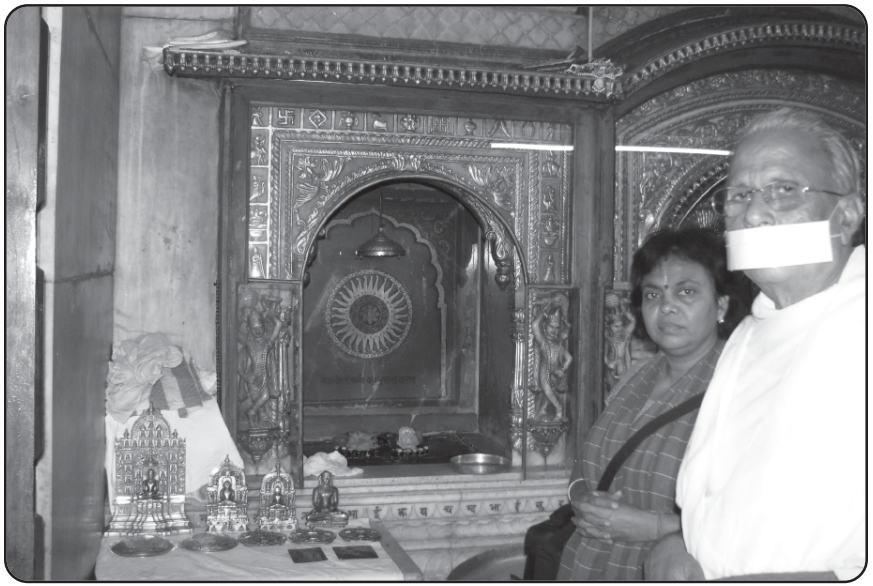

-भगवान महावीर की अंतिम चातुर्मास स्थली तथा निर्वाण भूमि पर निर्मित विशाल भव्य गांव मंदिर में स्थापित चरण-कमलों के समक्ष डॉ. विनीता जी तथा पूज्य गुरूदेव।

-सन् 1974, भगवान महावीर के पचीसवें निर्वाण शताब्दी महोत्सव पर श्री जैन श्वेताम्बर कोठी का वह अतिथि गृह, जहां पूज्य गुरूदेव ने छह माह से अधिक समय स्वाध्याय-ध्यान, चितंन-मनन तथा लेखन में लगाया।

-श्री जैन श्वेताम्बर कोठी राजगीर के प्रबन्धक श्री जयंती बाबू तथा श्रीमती मंजु बहिन पूज्य गुरूदेव के साथ। उस चातुर्मास में इस परिवार की विशेष सेवाएं रहीं।